НАЦИОНАЛЬНЫЙ ДЕНЬ "ОХИ" – НАТИСК ФАШИСТКОЙ АГРЕССИИ в ОКТЯБРЕ 1940г. **__ ГРЕКО-ИТАЛЬЯНСКАЯ ВОЙНА*1940-41 гг.*, АЛБАНСКИЙ ЭПОС__ОПЕРАЦИЯ по СПАСЕНИЮ ПАМЯТНИКОВ АНТИЧНОСТИ, МУЗЕЙНЫХ АРТЕФАКТОВ, КУЛЬТУРНОГО НАСЛЕДИЯ ЭЛЛАДЫ !!!**

ΕΘΝΙΚΗ ΕΠΕΤΕΙΟΣ ΤΟΥ "ΟΧΙ" ΣΤΟΝ ΙΤΑΛΙΚΟ ΦΑΣΙΣΜΟ **– ΕΛΛΗΝΟ-ΙΤΑΛΙΚΟΣ ΠΟΛΕΜΟΣ, ΝΙΚΗΦΟΡΟΣ ΠΡΟΕΛΑΣΗ ΕΛΛΗΝΙΚΟΥ ΣΤΡΑΤΟΥ στο ΑΛΒΑΝΙΚΟ ΜΕΤΩΠΟ –** ***Η ΕΠΙΧΕΙΡΗΣΗ ΔΙΑΣΩΣΗΣ ΤΩΝ ΕΛΛΗΝΙΚΩΝ ΑΡΧΑΙΟΤΗΤΩΝ, ΤΗΣ ΠΟΛΙΤΙΣΜΙΚΗΣ ΚΛΗΡΟΝΟΜΙΑΣ της ΕΛΛΑΔΑΣ !!!***

Национальный Археологический Музей Афин. / Εθνικό Αρχαιολογικό Μουσείο της Αθήνας.

ГРЕЧЕСКИЙ КУЛЬТУРНЫЙ ЦЕНТР
Москва, Алтуфьевское шоссе, 44
офис № 9, 2 этаж
Тел.: 7084809 – Тел./Факс: 7084810

ΚΕΝΤΡΟ ΕΛΛΗΝΙΚΟΥ ΠΟΛΙΤΙΣΜΟΥ
Altufyevskoe shosse, 44, office No 9, 2nd floor
127566 Moscow, Russia
Tel.: +7 495 7084809; Tel./Fax: +7 495 7084810

e-mail: hcc@mail.ru info@hecucenter.ru
www.hecucenter.ru
skype: hellenic.cultural.center
facebook: https://www.facebook.com/Hecucenter/
vkontakte: http://vk.com/hecucenter
Instagram: @hecucenter

Пустой зал музея, понедельник 28 апреля 1949 года. Фотоархив Национального Археологического Музея. /Η άδεια αίθουσα του Μουσείου την Δευτέρα 28 Απρίλη 1949. Φωτογραφικό Αρχείο Εθνικού Αρχαιολογικού Μουσείου

В воскресенье, **27 апреля 1941 года** , в 8.10 первые немецкие моторизованные части вторгаются в пустую столицу Греции, в Афины. Люди заперты в своих домах. Единственные, кто приветствует их на въезде в город - на пересечении проспектов Александра и Кифисия , в районе Ампелокипи - это генерал **Кавракос** , мэр Афин **Амбросиос Плитас**, мэр Пирея **Манусос** и префект Аттики **Пезопулос**.

Уже на следующий день, в понедельник, 28 апреля, немецкие офицеры посещают Национальный археологический музей и видят пустые комнаты ...

Κυριακή του Θωμά, **27 Απρίλη 1941**, στις 8.10 το πρωί, εισβάλουν οι πρώτες μηχανοκίνητες μονάδες των Γερμανών σε μια άδεια από κόσμο πρωτεύουσα. Ο λαός είναι κλεισμένος στα σπίτια του. Οι μόνοι που τους υποδέχονται στην είσοδο της πόλης – στη διασταύρωση Λεωφόρου Αλεξάνδρας και Κηφισίας, στους Αμπελόκηπους — είναι: Ο **Στρατηγός Καβράκος**, ο Δήμαρχος της Αθήνας

Αμβρόσιος Πλυτάς, ο Δήμαρχος Πειραιά **Μανούσος** και ο Νομάρχης Αττικής **Πεζόπουλος.**

Την άλλη κιόλας μέρα, Δευτέρα 28 Απρίλη, Γερμανοί αξιωματικοί επισκέπτονται το Εθνικό Αρχαιολογικό Μουσείο και αντικρίζουν άδειες αίθουσες…

Вторая мировая война, помимо неисчислимых человеческих жизней, привела к потере и уничтожению бесчисленных произведений искусства и памятников. Бомбардировки, уличные бои, грабежи нанесли огромный удар по культурному наследию Европы.

Яркими исключениями в этом мрачном фоне были отдельные лица, общественные организации, группы людей и должностные лица, которые во время Войны поставили своей целью спасение и дальнейшую *репатриацию* и защиту произведений искусства и других ценных предметов культурного наследия, а также сохранение исторических зданий и памятников от нацистов и катастрофических последствий Войны. В самый мрачный и трагический исторический период 20-го века официальные органы **власти** и **отельные** люди совместными усилиями вели героическую кампанию по спасению культурного наследия Европы.

Итоги этой эпопеи: Достаточно учесть, что сегодня на витринах Национального Археологического Музея Греции в Афинах находится 11 000 экспонатов, а в его складах более 200 000 артефактов.

FacebookMessengerTwitterE-mailWhatsApp

Ο Δεύτερος Παγκόσμιος Πόλεμος, πέρα από το ανυπολόγιστο κόστος σε ανθρώπινες ζωές, επέφερε την απώλεια και την καταστροφή αναρίθμητων έργων τέχνης και μνημείων. Βομβαρδισμοί, οδομαχίες, λεηλασίες και πλιάτσικο προκάλεσαν ένα τεράστιο πλήγμα στην πολιτιστική κληρονομία της Ευρώπης.

Φωτεινές εξαιρέσεις, σε αυτό το ζοφερό πολιτιστικό τοπίο, υπήρξαν μεμονωμένα άτομα, ομάδες, αλλά και επίσημοι φορείς, οι οποία κατά τη διάρκεια του πολέμου έθεσαν ως στόχο να επαναπατρίσουν και να προστατέψουν έργα τέχνης, και άλλα

πολύτιμα αντικείμενα, καθώς και να διαφυλάξουν ιστορικά κτίρια και μνημεία από τους Ναζί και τις καταστροφικές συνέπειες του πολέμου. Κατά τη διάρκεια της σκοτεινότερης και τραγικότερης ιστορικής περιόδου του 20ου αιώνα, επίσημοι φορείς και ομάδες ατόμων διεξήγαγαν μια παράπλευρη εκστρατεία διάσωσης της ευρωπαϊκής πολιτιστικής κληρονομιάς.

Τι μένει από αυτή την εποποιία; Αρκεί να αναλογιστεί κανείς ότι σήμερα υπάρχουν 11.000 εκθέματα και πάνω από 200.000 αντικείμενα βρίσκονται στις αποθήκες του Εθνικού Αρχαιολογικού Μουσείου στην Αθήνα.

ГРЕЧЕСКИЙ КУЛЬТУРНЫЙ ЦЕНТР
Москва, Алтуфьевское шоссе, 44
офис № 9, 2 этаж
Тел.: 7084809 – Тел./Факс: 7084810

ΚΕΝΤΡΟ ΕΛΛΗΝΙΚΟΥ ΠΟΛΙΤΙΣΜΟΥ
Altufyevskoe shosse, 44, office No 9, 2nd floor
127566 Moscow, Russia
Tel.: +7 495 7084809; Tel./Fax: +7 495 7084810

e-mail: hcc@mail.ru info@hecucenter.ru
www.hecucenter.ru
skype: hellenic.cultural.center
facebook: https://www.facebook.com/Hecucenter/
vkontakte: http://vk.com/hecucenter
Instagram: @hecucenter

Скрытие мраморной статуи Посейдона Фото: Национальный археологический музей./ Απόκρυψη του μαρμάρινου αγάλματος Ποσειδώνα | Φώτο: Εθνικό Αρχαιολογικό Μουσείο

Еще в 1937 году высказывались опасения по поводу сохранности древностей в случае авианалётов. Спустя месяц после начала греко-итальянской войны, 11 ноября 1940 года, до всех музеев доносится письмо, озаглавленное «***Общие Технические Инструкции по защите древностей различных музеев от воздушных опасностей***».

В инструкциях предлагалось два способа: один заключался в том, чтобы накрыть статуи мешками с песком после того, как они были закрыты в деревянные рамы, а второй, который в конечном итоге был предпочтен, заключался в закреплении статуй и закапывании их на полу зала или в помещении во дворе музея или во дворах и подвалах государственных учреждений.

Статуи должны были быть помещены в траншею, укрепленную бетоном, в горизонтальном положении, покрытую безопасными материалами, и траншея должна была быть заделана цементной плитой. Статуи из меди и глины нужно было завернуть в тарную или вощеную бумагу, чтобы избежать повреждений, вызванных влагой, и поместить в безопасные коробки.

Ήδη από το 1937 είχαν αναπτυχθεί προβληματισμοί για την διάσωση των αρχαιοτήτων σε περίπτωση αεροπορικών επιδρομών.

Ένα μήνα μετά την έναρξη του ελληνοιταλικού πολέμου, στις 11 Νοέμβρη 1940, φτάνει σε όλα τα μουσεία επιστολή με τίτλο «Γενικαί τεχνικαί οδηγίαι για την προστασία των αρχαίων των διαφόρων μουσείων από τους εναερίους κινδύνους».

Οι οδηγίες πρότειναν δυο τρόπους: Ο ένας να καλυφτούν τα αγάλματα με σάκους γεμάτους με άμμο, αφού κλειστούν σε ξύλινα πλαίσια, και ο δεύτερος που τελικά

προτιμήθηκε, ήταν να ασφαλιστούν τα αγάλματα και να θαφτούν στο πάτωμα της αίθουσας ή στην αυλή του μουσείου ή σε αυλές και υπόγεια δημόσιων ιδρυμάτων. Τα αγάλματα έπρεπε να αποτεθούν σε επενδυμένο με οπλισμένο σκυρόδεμα όρυγμα, σε οριζόντια θέση, να καλυφτούν με αδρανή υλικά και να σφραγιστεί το όρυγμα με πλάκα τσιμέντου. Τα χάλκινα και τα πήλινα έπρεπε να τυλιχτούν με πισσόχαρτο ή κερόχαρτο, για να αντιμετωπιστεί η πιθανή φθορά από υγρασία και να μπουν σε ασφαλή κιβώτια.

Η απόκρυψη του Κούρου του Σουνίου στο όρυγμα που είχε διανοιχθεί μπροστά από το βάθρο του. (Φωτογραφικό Αρχείο Εθνικού Αρχαιολογικού Μουσείου).

Укрытие Куроса из Суниона в траншее, которое было открыто перед его пьедесталом. (Фотоархив Национального археологического музея).

Сразу же началась интенсивная, напряженная работа в музеях страны. Во всех музеях страны судьями и археологами были сформированы **Комитеты по сокрытию и охране древностей**, которые вместе с охраной музеев и

археологических памятников, мастерами музеев, рабочими, некоторыми студентами-добровольцами и несколькими иностранными археологами, бросились самоотверженно спасать наше культурное наследие.

Αμέσως σήμανε συναγερμός στα μουσεία της χώρας. Σε όλα τα Μουσεία σχηματίστηκαν **Επιτροπές Απόκρυψης και Ασφάλισης Αρχαιοτήτων** από δικαστικούς και αρχαιολόγους , που με τους φύλακες των μουσείων και των αρχαιολογικών τόπων, τους τεχνίτες των μουσείων, τους εργάτες μερικούς εθελοντές φοιτητές και λίγους ξένους αρχαιολόγους ρίχτηκαν με αυταπάρνηση στον αγώνα για τη διάσωση του πολιτιστικού μας πλούτου.

Από την έκθεση για την ξενάγηση: ο Δίας ή Ποσειδώνας του Αρτεμισίου τυλιγμένος με πισσόχαρτο για να ενταφιαστεί το 1940-41 | Φωτογραφικό Αρχείο Εθνικού Αρχαιολογικού Μουσείου

Бронзовая статуя Посейдона Артемизио, завернутая в тарную бумагу для защиты, незадолго до его захоронения. Фотоархив Национального археологического музея.

ГРЕЧЕСКИЙ КУЛЬТУРНЫЙ ЦЕНТР
Москва, Алтуфьевское шоссе, 44
офис № 9, 2 этаж
Тел.: 7084809 – Тел./Факс: 7084810

ΚΕΝΤΡΟ ΕΛΛΗΝΙΚΟΥ ΠΟΛΙΤΙΣΜΟΥ
Altufyevskoe shosse, 44, office No 9, 2nd floor
127566 Moscow, Russia
Tel.: +7 495 7084809; Tel./Fax: +7 495 7084810

e-mail: hcc@mail.ru info@hecucenter.ru
www.hecucenter.ru
skype: hellenic.cultural.center
facebook: https://www.facebook.com/Hecucenter/
vkontakte: http://vk.com/hecucenter
Instagram: @hecucenter

Το χάλκινο άγαλμα του Ποσειδώνα του Αρτεμισίου τυλιγμένο με πισσόχαρτα προκειμένου να προστατευτεί, λίγο πριν το θάψιμό του. Φωτογραφικό Αρχείο Εθνικού Αρχαιολογικού Μουσείου.

Через два дня после вступления Греции во Вторую мировую войну был реализован план по сохранению и защите древних сокровищ Национального археологического музея от возможности авианалетов и уличных боев. В работе, продолжавшейся шесть месяцев, участвовали археологи, исследователи, технический персонал, кураторы и другие официальные лица, а также волонтеры.

В соответствии с инструкциями Департамента археологии по защите и сохранению древних предметов, хранящихся в музеях по всей Греции, мраморные скульптуры, керамика, статуэтки и бронзовые предметы (последние три в деревянных ящиках) были захоронены на нижних, подвальных этажах (в цокольных этажах) здания Археологического Музея Афин; в частности под залами старого здания Музея и в подвалах нового флигеля, где они были засыпаны песком высотой 3-4 метра.

Δύο μέρες μετά την είσοδο της Ελλάδας στον Β΄ Παγκόσμιο Πόλεμο τέθηκε σε εφαρμογή το σχέδιο για τη φύλαξη και την προστασία των αρχαίων θησαυρών του Εθνικού Αρχαιολογικού Μουσείου από το ενδεχόμενο αεροπορικών επιδρομών και οδομαχιών. Στις εργασίες, οι οποίες διήρκησαν έξι μήνες, συμμετείχαν αρχαιολόγοι, ερευνητές, εργατοτεχνικό προσωπικό, έφοροι και διάφοροι άλλοι αρμόδιοι, καθώς και εθελοντές.
Σύμφωνα με τις οδηγίες για την προστασία και φύλαξη των αρχαίων αντικειμένων που στεγάζονταν σε μουσεία ανά την ελληνική επικράτεια, η οποία εκδόθηκε από το Τμήμα Αρχαιολογίας, μαρμάρινα γλυπτά, κεραμικά, αγαλματίδια και αντικείμενα από χαλκό (τα τρία τελευταία μέσα σε ξύλινα κιβώτια) θάφτηκαν

κάτω από τα δάπεδα των αιθουσών του παλιού κτιρίου και στα υπόγεια της νέας πτέρυγας, όπου και σκεπάστηκαν με άμμο ύψους 3 – 4 μέτρων.

ΒΑΣΙΛΕΙΟΝ ΤΗΣ ΕΛΛΑΔΟΣ
ΤΟ ΥΠΟΥΡΓΕΙΟΝ ΘΡΗΣΚΕΥΜΑΤΩΝ ΚΑΙ ΕΘΝΙΚΗΣ ΠΑΙΔΕΙΑΣ
ΔΙΕΥΘΥΝΣΙΣ ΑΡΧΑΙΟΛΟΓΙΑΣ
Αρ. Πρωτ. 121357 Ἐν Ἀθήναις τῇ 11 Ν/μρίου 1940

Γενικαί τεχνικαί ὁδηγίαι
διά τήν προστασίαν τῶν ἀρχαίων τῶν διαφόρων μουσείων
ἀπό τούς ἐναερίους κινδύνους.

Οἱ ἐκ τῶν ἐναερίων βομβαρδισμῶν κίνδυνοι ὡς πρός τά ἀρχαῖα γλυπτά καί λοιπά ἐκθέματα εἰ τοῖς μουσείοις εἶναι δύο: 1/ κίνδυνοι πυρκαϊᾶς προκαλουμένης ἐξ ἐμπρηστικῶν βομβῶν αἵτινες δύνν νά θεωρηθοῦν ἐξόχως πιθανοί ὅταν τό Μουσεῖον καλύπτεται διά τοιούτου στέγης, ὡς σχεδόν συμβαίνει εἰς τά πλεῖστα τῶν ἡμετέρων Μουσείων, καί 2/ κίνδυνοι ἐκ τῶν ἐκρηκτικῶν λεγομένων βομβῶν, αἵτινες ἐπιφέρουν, εἴτε διά τῆς ἐντός τῆς αἰθούσης ἐκρήξεως αὐτῶν, εἴτε διά τήν τήν ἐκτός ταύτης κατάρρευσιν τῶν τοίχων καί καταπέρματίσιν τῶν ἐν τῇ αἰθούσῃ εὑρισκομένων ἀντικειμένων. Ἐπίσης ὑπάρχει ὁ κινδυνος τῆς ἐκτοξεύσεως βλημάτων καί θραυσμάτων.

Ἡ προστασία τῶν ἀντικειμένων ἀπό πυρκαϊᾶς δύναται εὐχερῶς νά ἐπιτευχθῇ διά τῆς περιαλύσεως τοῦ ἀγάλματος διά γαιοσάκκων, ἀφ οὗ προηγουμένως τοῦτο περιληφθῇ δι'ἑνός ξυλίνου ἐκριζώματος ἐπενδεδυμένου διά σανίδων ὡς τό ὑπόδειγμα

Δυστυχῶς ὅμως τό σύστημα τοῦτο δέν παρουσιάζει ἀξίαν λόγου ἀσφάλειαν, ἐάν πρόκειται περί ἐκρηκτικῶν βομβῶν μεγάλου βάρους. Ὑπό τάς συνθήκας ὑφ' ἃς σήμερον εὑρισκόμεθα ὁ ἁπλούστερος, οἰκονομικώτερος καί ταχύτερος τρόπος ἐξασφαλίσεως τῶν ἀναλμέτων καί λοιπῶν λιθίνων ἐν γένει ἀντικειμένων τῶν μουσείων εὑρέθη, ὅτι εἶναι ἡ κατάχωσις τούτων εἴτε ἐντός τοῦ δαπέδου τῆς αἰθούσης τῶν μουσείων, ἐφ ὅσον τοῦτο εἶναι ἰσόγειον καί ὑπόχρεω ὁ ἀναστούμενος πρός τοῦτο ἐλεύθερος χῶρος, εἴτε ἐν ἐναντίᾳ περιπτώσει, ἐν αὐτῇ ταύτῃ τῇ αὐλῇ τοῦ Μουσείου ἤ τῆς περιοχῆς αὐτοῦ ἤ ἐν ἐλλείψει τούτων εἰς αὐλές περιφραγμένας δημοσίων ἱδρυμάτων ἤ καί ἐντός τῶν ὑπογείων αὐτῶν.

Διά τῆς καταχώσεως ἐπιτυγχάνεται ἡ ἐξασφάλισις τοῦ ἀντικειμένου 1) ἀπό τῆς πυρκαϊᾶς, 2/ ἐκ τῶν βλημάτων καί θραυσμάτων τῶν βομβῶν καί 3) ἀπό τῆς ἐκτονώσεως τῆς προκαλουμένης κατά κλᾶν τήν ἔκκρηξιν τῆς βόμβας, ἥτις ἐπιφέρει τά ἀποτελέσματά της εἰς πᾶν ἀντικείμενον εὑρισκόμενον ἄνωθεν τῆς ἐπιφανείας τοῦ ἐδάφους ἤ ἄνωθεν τοῦ ἐν ἐπιχωματώσει τελοῦντος δαπέδου τῆς αἰθούσης. Πρός μείωσιν τοῦ κινδύνου τούτου συνιστᾶται ὅμως 1/ τό βάθος τῆς καταχώσεως ἀπό τῆς ἐπιφανείας τοῦ δαπέδου τῆς αἰθούσης ἐάν κρίνεται περί καταχώσεως ἐντός αὐτῆς ἤ ἀπό τῆς ἐπιφανείας τοῦ φυσικοῦ ἐδάφους τῆς αὐλῆς ἤ τῆς περιοχῆς τοῦ Μουσείου κλπ. νά εἶναι ὅσον τό δυνατόν μέγα ἀναλόγως καί τῆς συστάσεως τοῦ ἐδάφους καί τῆς ἀντιστοίχου δυνατότητος ἵνα μή ἐπέρχηται κατάρρευσις τῶν πρειῶν τῆς ἀκκαφῆς κατά τήν ἐνδρυσιν τῆς τάφρου, πάντων ὅμως θά πρέπει ἡ κατωτάτη στάθμη τῆς ἐπιχωματώσεως εἰς ἣν θέλει τοποθετηθῇ τό πρός διασφάλισιν ἀντικείμενον νά ὑπέρχηται κατά ἓν μέτρον τοὐλάχιστον τῆς ἀνωτάτης στάθμης τῶν ὑπογείων ὑδάτων. Ἐπίσης ἡ κατωτάτη αὕτη στάθμη ἀκκαφῆς νά εἶναι εἰς τοιοῦτον βάθος ὥστε νά μή ἐπιδράσῃ δυσμενῶς ἐπί τῆς θεμελιώσεως τοῦ κτιρίου. Πρός τοῦτο δέον προηγουμένως νά ἐξακριβωθῇ τό βάθος θεμελιώσεως τῶν τοίχων, προκειμένου περί καταχώσεως ἐντός τῆς αἰθούσης καί 2/ ἡ ἐπικάλυψις διά μιᾶς σιδηροπαγοῦς πλακός τῆς ἄνω ἐπιφανείας τοῦ ἐδάφους ἔνθα ἐγένετο ἡ κατάχωσις.

Ἐνόεῖτον ὅτι διά τῆς πλακός ταύτης ἐπιτυγχάνεται ἡ ἀποτροπή τῆς ἐκρήξεως τῆς βόμβας ἄνευ διεισδύσεως ἐντός τοῦ ἐδάφους, ὁπότε οὐδεμία ζημία προκαλεῖται εἰς τό καταχωσθέν ἀντικείμενον.

Εἶναι προφανές ὅτι αἱ διαστάσεις τῆς σιδηροπαγοῦς πλακός θέλουσιν ἐξαρτηθῇ κ τῶν διατιθεμένων εἰς ἑκάστην περίπτωσιν οἰκονομικῶν μέσων, ἅτινα θά ὦσιν ἀνάλογα πρός τήν σπουδαιότητα τοῦ ἐξασφαλιζομένου ἀντικειμένου ὡς ἐλάχιστον πάχος τοιαύτης πλακός ὁρίζεται 0,60 μέ διπλοῦν ὁπλισμόν' ἤτοι μία ἐσχάρα ἐκ σιδηρῶν ῥάβδων διαμέτρου 0.010 – 0.012 ἀνά 0.15 εἰς τετράγωνα εἰς τό κάτω μέρος' ὁμοία ἐσχάρα θά τοποθετηθῇ καί εἰς τό ἄνω μέρος τῆς πλακός, ἀναλογίαν μπετόν 400 κιλά τσιμέντου ἀνά κυβικόν μέτρον' προτιμητέον δέ νά γίνεται χρῆσις τσιμέντου ὑφηλῆς ἀντοχῆς. Ἡ ἔκτασις τῆς πλακός κέρας τοῦ χείλους τῆς ἐκσκαφῆς (τάφρου) χρεῖαι νά εἶναι τοὐλάχιστον ἑνός μέτρου. ἡ ὡς ἄνω πλάξ θά διαστρωθῇ ἀφ δυ γίνῃ πλήρης κίχωσις τῆς τάφρου εἰ δυνατόν μέ κοπάνισμα τῶν χωμάτων ἄνευ ὅμως καταβρέγματος ἀνά στρώματα 0.30 – 0.50 καί ἀφ ὁ προηγουμένως στρωθῇ ἐπί τοῦ χώματος λεπτόν στρῶμα 0.05 ἐξ ἰσχνοῦ μπετόν ἀναλογίας 150 κιλῶν ἀνά κυβικόν.

Ἐν πάσῃ περιπτώσει ἐάν δέν πρόκειται νά γίνῃ ἡ σιδηροπαγής πλάξ ἤ καί ἐάν αὕτη γίνῃ ἀκμῆ, ἐπιτυγχάνεται μείζων ἀσφάλεια, ἐάν ἡ ἐπιφάνεια τοῦ ἐδάφους ἤ τοῦ δαπέδου τοῦ Μουσείου ἤ καί τῆς σιδηροπαγοῦς πλακός, ἐάν ὑπάρχῃ τοιαύτη ἐπιστρωθῇ διά σειρᾶς γαιοσάκκων καί ἐλλείψει τούτων διά

%

11 ноября 1940 года. Центральные Технические Инструкции по защите памятников старины и древностей, хранящихся в музеях, от воздушных опасностей. Из Исторического архива Археологической службы - Костаса Пашалидиса «Основание, история и приключения Национального археологического музея, 130 лет работы и функционирования, изложенные в одной лекции», 2013 г.

ГРЕЧЕСКИЙ КУЛЬТУРНЫЙ ЦЕНТР
Москва, Алтуфьевское шоссе, 44
офис № 9, 2 этаж
Тел.: 7084809 – Тел./Факс: 7084810

ΚΕΝΤΡΟ ΕΛΛΗΝΙΚΟΥ ΠΟΛΙΤΙΣΜΟΥ
Altufyevskoe shosse, 44, office No 9, 2nd floor
127566 Moscow, Russia
Tel.: +7 495 7084809; Tel./Fax: +7 495 7084810

e-mail: hcc@mail.ru info@hecucenter.ru
www.hecucenter.ru
skype: hellenic.cultural.center
facebook: https://www.facebook.com/Hecucenter/
vkontakte: http://vk.com/hecucenter
Instagram: @hecucenter

11 Νοέμβρη 1940. Γενικαί τεχνικαί οδηγίαι για την προστασία των αρχαίων των διαφόρων μουσείων από τους εναερίους κινδύνους. Από το Ιστορικό Αρχείο της Αρχαιολογικής Υπηρεσίας – Κώστα Πασχαλίδη «Η Ίδρυση, η Ιστορία και οι Περιπέτειες του Εθνικού Αρχαιολογικού Μουσείου, 130 χρόνια λειτουργίας σε μία διάλεξη», το 2013.

В **музее Акрополя** скульптуры хранились в различных криптах. Большая яма была вырыта внутри Парфенона и была разделена на три отсека. В конце января 1941 года яма была заполнена скульптурами и было установлено покрытие плитой из железобетона. Те памятники античности, которые не поместились в яме внутри Парфенона, были спрятаны «в склепе девяти ручеек-эннеакурон», в тюрьмах Сократа «в склепе из ворот музея» и «в склепе двора». Также были применены и скалы Акрополя вдоль северной стороны Парфенона, высечены четыре скважины, где хоронили памятники античности, а также спрятали в канализационной системе».

Στο **Μουσείο της Ακρόπολης** τα γλυπτά φυλάχτηκαν σε διάφορες κρύπτες. Ανοίχτηκε μεγάλος λάκκος μέσα στην αίθουσα του Παρθενώνα και χωρίστηκε σε τρία διαμερίσματα. Στο τέλος του Γενάρη του 1941 ο λάκκος είχε γεμίσει από τα γλυπτά και κατασκευάστηκε μια καλυπτήρια πλάκα από οπλισμένο σκυρόδεμα. Οσα αρχαία δεν χώρεσαν στο λάκκο φυλάχτηκαν «εις την κρύπτην της Εννεακρούνου», στις φυλακές του Σωκράτη, «εις την κρύπτην της πύλης του Μουσείου» και «εις την κρύπτην της αυλής». Χρησιμοποιήθηκαν επίσης πάνω στο Βράχο της Ακρόπολης, κατά μήκος της βόρειας πλευράς του Παρθενώνα, τέσσερα λαξευτά φρέατα, όπου τάφηκαν σε στρώσεις αρχαία, όπως επίσης τάφηκαν και «εις την λεγόμενην υπόνομον».

ГРЕЧЕСКИЙ КУЛЬТУРНЫЙ ЦЕНТР
Москва, Алтуфьевское шоссе, 44
офис № 9, 2 этаж
Тел.: 7084809 – Тел./Факс: 7084810

ΚΕΝΤΡΟ ΕΛΛΗΝΙΚΟΥ ΠΟΛΙΤΙΣΜΟΥ
Altufyevskoe shosse, 44, office No 9, 2nd floor
127566 Moscow, Russia
Tel.: +7 495 7084809; Tel./Fax: +7 495 7084810

e-mail: hcc@mail.ru info@hecucenter.ru
www.hecucenter.ru
skype: hellenic.cultural.center
facebook: https://www.facebook.com/Hecucenter/
vkontakte: http://vk.com/hecucenter
Instagram: @hecucenter

Археолог Яннис Милиадис осматривает богиню Афину , предмет № 140 музея Акрополя, после ее извлечения из склепа в 1947 г. - (Из книги В. Петракоса «Памятники античности Греции в войне 1940-1944 гг.»). /
Ο Γιάννης Μηλιάδης εξετάζει την Αθηνά αρ. 140 του Μουσείου Ακροπόλεως, μετά την εξαγωγή της από την κρύπτη της το 1947 – (Από το βιβλίο του Β. Πετράκου «Τα αρχαία της Ελλάδος στον πόλεμο 1940 -1944»).

В **Музее Пирея** наиболее ценные скульптуры были помещены в глубокий полукруглый канал оркестра античного театра, который находится за пределами музея. Скульптуры меньшей ценности вместе с керамикой, бронзой, стеклом и глиной были похоронены на полу нового зала музея.
Στο **Μουσείο του Πειραιά** τα πολυτιμότερα γλυπτά καταχώθηκαν στον βαθύ ημικυκλικό αγωγό της ορχήστρας του αρχαίου θεάτρου, που βρίσκεται έξω από το

μουσείο. Τα μικρότερης αξίας γλυπτά μαζί με τα κεραμικά, τα χαλκά, τα γυάλινα και τα πήλινα θάφτηκαν στο δάπεδο της νέας αίθουσας του μουσείου.

Две пещерные гробницы в саду Дельфийского музея, где были спрятаны ценные древние артефакты, в том числе бронзовый Иниохос-Всадник. / Οι δυο σπηλαιώδεις τάφοι στον κήπο του Μουσείου Δελφών, όπου κρύφτηκαν πολύτιμα αρχαία, μεταξύ των οποίων ο χάλκινος Ηνίοχος.

В Дельфийском музее в первую очередь были сохранены движимые предметы старины, в том числе Иниохос/Всадник - сначала в двух резных гробницах, которые все еще можно увидеть в саду музея. Остальные хранились в подземной эллинистической гробнице между музеем и святилищем. Иниохос/Всадник был разделен на две части, которые были помещены в ящики с соломой и хлопком. Наряду с частями статуи были размещены небольшие бронзовые изделия из Дельфийского музея.

Στο **Μουσείο των Δελφών** τα ευμετακόμιστα αρχαία, ανάμεσά τους ο Ηνίοχος, εξασφαλίστηκαν πρώτα – πρώτα στους δυο λαξευτούς τάφους που είναι και σήμερα θεατοί στον κήπο του μουσείου. Τα υπόλοιπα φυλάχτηκαν στον υπόγειο ελληνιστικό τάφο μεταξύ του μουσείου και του ιερού. Ο Ηνίοχος είχε χωριστεί σε δυο τμήματα, τα οποία είχαν τοποθετηθεί σε κιβώτια με άχυρο και μπαμπάκι. Μαζί με τα μέρη του αγάλματος είχαν τοποθετηθεί και μικρά χάλκινα του Μουσείου Δελφών.

В Музее **Керамикос** семь скульптур были похоронены в двух ямах, которые были вскрыты за памятниками Дексилею и Деметрию Памфилу, а 19 ящиков, полных древностей, были переданы в Национальный музей.
Στο **Μουσείο του Κεραμικού** επτά γλυπτά τάφηκαν σε δυο λάκκους που ανοίχτηκαν πίσω από τα μνημεία του Δεξίλεω και της Δημητρίας και Παμφίλης, ενώ 19 κιβώτια γεμάτα αρχαιότητες μεταφέρθηκαν στο Εθνικό Μουσείο.

Подобную титаническую борьбу за сохранение древностей с абсолютным успехом вели все музеи страны. **Нумизматический, Византийский, Музеи Олимпии, Коринфа, Фив, Халкиды, Спарты, Тегеи, Волоса, Корфу, Кефалонии, Ретимно, Салоников, Элефсины, Нафплиона** и других городов.

Ανάλογος τιτάνιος αγώνας για την διάσωση των αρχαιοτήτων, δόθηκε με απόλυτη επιτυχία, από το σύνολο των Μουσείων της χώρας. Το **Νομισματικό**, το **Βυζαντινό**, τα **Μουσεία Ολυμπίας, Κορίνθου, Θηβών, Χαλκίδας, Σπάρτης, Τεγέας, Βόλου, Κέρκυρας, Κεφαλονιάς, Ρεθύμνου, Θεσσαλονίκης, Ελευσίνας, Ναυπλίου** και τα υπόλοιπα.

ГРЕЧЕСКИЙ КУЛЬТУРНЫЙ ЦЕНТР
Москва, Алтуфьевское шоссе, 44
офис № 9, 2 этаж
Тел.: 7084809 – Тел./Факс: 7084810

ΚΕΝΤΡΟ ΕΛΛΗΝΙΚΟΥ ΠΟΛΙΤΙΣΜΟΥ
Altufyevskoe shosse, 44, office No 9, 2nd floor
127566 Moscow, Russia
Tel.: +7 495 7084809; Tel./Fax: +7 495 7084810

e-mail: hcc@mail.ru info@hecucenter.ru
www.hecucenter.ru
skype: hellenic.cultural.center
facebook: https://www.facebook.com/Hecucenter/
vkontakte: http://vk.com/hecucenter
Instagram: @hecucenter

Статуя Афродиты с Панасом и Эротом, покрытая защитной гипсовой формой. Фотоархив Национального археологического музея. / Το άγαλμα της Αφροδίτης με τον Πάνα και τον Ερωτα, καλυμμένο με προστατευτικό γύψινο καλούπι. Φωτογραφικό Αρχείο Εθνικού Αρχαιολογικού Μουσείου

По решению Министерской Коллегии, в Национальном археологическом музее был создан Комитет по сокрытию и сохранности экспонатов во главе с тремя ареопагитами/высшими судьями, а также со следующими членами: с

секретарем Археологического общества **Йоргосом Экономосом**, временным ИО директора музея **Анастасиосом Орландосом**, профессором **Спиридоном Маринатосом,** а также с Яннисом Милиадисом [впоследствии Национальный советник Политического комитета национального освобождения (ПЕЕА)] и с **Семни Папаспириди-Карузу**, и с куратором **Иоанной Константину;** также в состав Комитета вошли и некоторые инженеры и архитекторы министерства, а также волонтеры, такие, как директор Австрийского Археологического Института **Otto Walter**, британский археолог **Allan Wace** и будущий академик **Спирос Яковидис**, который тогда являлся студентом первого курса археологии.

Στο **Εθνικό Αρχαιολογικό Μουσείο** συστάθηκε μια Επιτροπή Απόκρυψης και Ασφάλισης των εκθεμάτων, με υπουργική απόφαση, με επικεφαλής τρεις Αρεοπαγίτες και μέλη τον γραμματέα της Αρχαιολογικής Εταιρείας **Γεώργιο Οικονόμο**, τον προσωρινό διευθυντή του μουσείου **Αναστάσιο Ορλάνδο**, τον καθηγητή **Σπυρίδωνα Μαρινάτο**, τους εφόρους **Γιάννη Μηλιάδη** (ο μετέπειτα Εθνοσύμβουλος στην Πολιτική Επιτροπή Εθνικής Απελευθέρωσης (ΠΕΕΑ), και η **Σέμνη Παπασπυρίδη -Καρούζου**, την επιμελήτρια **Ιωάννα Κωνσταντίνου** και ορισμένους μηχανικούς και αρχιτέκτονες του υπουργείου. Στην ομάδα προστέθηκαν και εθελοντές, όπως ο διευθυντής του Αυστριακού Αρχαιολογικού Ινστιτούτου **Otto Walter**, ο Βρετανός αρχαιολόγος **Allan Wace** και ο ακαδημαϊκός **Σπύρος Ιακωβίδης**, που ήταν τότε πρωτοετής φοιτητής Αρχαιολογίας.

«Рано утром, еще до захода луны, в музее собрались те, кто занимался этой работой. Они уходили ночью, чтобы разойтись по домам», - пишет ведущий археолог **Семни Карузу**. Скульптуры хранились согласно размеру и важности каждой. Самые большие из них выстроились в глубоких траншеях, вырытых в полу северных залов музея, который, в конце концов, был основан на мягких породах. Для опускания статуй в траншеи использовались самодельные деревянные краны, которые постоянно обрабатывались

мастерами музея. Траншеи, похожие на полиандрию, то есть братские могилы, собрали ошеломленное множество фигур.

Подросток с острова Антикифира в очень деликатный и опасный момент. / Ο Έφηβος των Αντικυθήρων σε μια ιδιαίτερα λεπτή και επικίνδυνη στιγμή. /

«Πολύ πρωί, πριν να δύσει η σελήνη, συγκεντρώνονταν στο μουσείο όσοι είχαν αναλάβει την εργασία τούτη. Νύχτα έφευγαν το βράδυ για να πάνε στα σπίτια τους» γράφει χαρακτηριστικά η γνωστή αρχαιολόγος **Σέμνη Καρούζου**. Η φύλαξη

των γλυπτών γινόταν ανάλογα με το μέγεθος και τη σημασία του καθενός. Τα μεγαλύτερα από αυτά παρατάσσονταν όρθια σε βαθιά ορύγματα που είχαν ανοιχτεί στα δάπεδα των βόρειων αιθουσών του μουσείου, το οποίο ήταν, άλλωστε, θεμελιωμένο πάνω στον μαλακό βράχο. Για την κάθοδο των αγαλμάτων στα ορύγματα χρησιμοποιήθηκαν αυτοσχέδιοι ξύλινοι γερανοί, τους οποίους χειρίζονταν αδιάκοπα οι τεχνίτες του μουσείου. Τα ορύγματα, που έμοιαζαν με πολυάνδρια, δηλαδή με ομαδικούς τάφους, συγκέντρωσαν ένα σαστισμένο πλήθος μορφών

Απόκρυψη του αγάλματος Κούρου του 600 π.Χ. κάτω από το δάπεδο της αίθουσας όπου ήταν τοποθετημένος | Φωτογραφικό Αρχείο Εθνικού Αρχαιολογικού Μουσείου

Курос Суниона с 600 г. до н. э. привязанный поперечными веревками к груди, висит на шкиве между деревянными опорами для операции спуска.

Если лозунгом на фронте служило выражение «***Аэра***» - «***Воздух***», то в музейном сообществе того периода распространилось выражение «подожги»: эти слова использовал скульптор **Андреас Панайотакис** как приказ, когда скульптуры были готовы к возвращению на землю. Чтобы завершить движение связанных статуй богов, которых сняли со своего пьедестала с помощью специального приспособления, работники музея таскали статуи вверх к песочнице, и их опускали под теми же залами, на которых они ранее

были выставлены. Обо всем этом мы узнаем из ценнейших трудов великой женщины-археолога **Семни Карузу** – на ценнейшие письменные свидетельства которой ссылаются ее нынешние коллеги.

Κι αν το σύνθημα στο μέτωπο ήταν «Αέρα», στο μουσείο ήταν «βάλε φωτιά»: αυτές τις λέξεις χρησιμοποιούσε ο γλύπτης **Ανδρέας Παναγιωτάκης** ως παράγγελμα όταν τα γλυπτά ήταν έτοιμα για την επιστροφή τους στη γη. Για να ολοκληρωθεί η μετακίνηση των δεμένων θεών, που με την τροχαλία είχαν σηκώσει από το βάθρο τους, είχαν σύρει μέχρι το σκάμμα και απέμενε η κατάβασή τους, στις ίδιες αίθουσες στις οποίες προηγουμένως εκτίθεντο. Μαθαίνουμε για όλα αυτά από τα γραπτά της σπουδαίας κυρίας της αρχαιολογίας, της **Σέμνης Καρούζου**, πολύτιμη μαρτυρία που επικαλούνται οι σημερινοί συνάδελφοί της.

"Если статуям не было нанесено никакого ущерба, несмотря на эти передвижения, то это в основном связано с тем, что руководителем мастерской рабочих тогда был, до первых лет после войны, старый, опытный и преданный скульптор из греческих музеев, ***Андреас Панайотакис*** », рассказывает **Семни Карузу**.

«Αν καμιά ζημιά δεν έγινε στα μάρμαρα, παρόλες αυτές τις μετακινήσεις, οφείλεται τούτο κυριότατα στο ότι προϊστάμενος του συνεργείου των εργατών ήταν τότε, έως και στα πρώτα χρόνια ύστερα από τον πόλεμο, ο παλαιός, έμπειρος και αφοσιωμένος γλύπτης των ελληνικών μουσείων ***Ανδρέας Παναγιωτάκης***» αφηγείται η **Σέμνη Καρούζου**.

ГРЕЧЕСКИЙ КУЛЬТУРНЫЙ ЦЕНТР
Москва, Алтуфьевское шоссе, 44
офис № 9, 2 этаж
Тел.: 7084809 – Тел./Факс: 7084810

ΚΕΝΤΡΟ ΕΛΛΗΝΙΚΟΥ ΠΟΛΙΤΙΣΜΟΥ
Altufyevskoe shosse, 44, office No 9, 2nd floor
127566 Moscow, Russia
Tel.: +7 495 7084809; Tel./Fax: +7 495 7084810

e-mail: hcc@mail.ru info@hecucenter.ru
www.hecucenter.ru
skype: hellenic.cultural.center
facebook: https://www.facebook.com/Hecucenter/
vkontakte: http://vk.com/hecucenter
Instagram: @hecucenter

Один из окопов со множеством статуй. Справа сотрудник музея, живое существо среди памятников старины. Фотоархив Национального археологического музея./ Ένα από τα ορύγματα με τα πλήθη των αγαλμάτων. Δεξιά διακρίνεται ο εργαζόμενος του Μουσείου, μια ζωντανή παρουσία. Φωτογραφικό Αρχείο Εθνικού Αρχαιολογικού Μουσείου

ГРЕЧЕСКИЙ КУЛЬТУРНЫЙ ЦЕНТР
Москва, Алтуфьевское шоссе, 44
офис № 9, 2 этаж
Тел.: 7084809 – Тел./Факс: 7084810

ΚΕΝΤΡΟ ΕΛΛΗΝΙΚΟΥ ΠΟΛΙΤΙΣΜΟΥ
Altufyevskoe shosse, 44, office No 9, 2nd floor
127566 Moscow, Russia
Tel.: +7 495 7084809; Tel./Fax: +7 495 7084810

e-mail: hcc@mail.ru info@hecucenter.ru
www.hecucenter.ru
skype: hellenic.cultural.center
facebook: https://www.facebook.com/Hecucenter/
vkontakte: http://vk.com/hecucenter
Instagram: @hecucenter

Προετοιμασία του γεωμετρικού αμφορέα από το Δίπυλο της Αθήνας του 750 π.Χ και άλλων αγγείων προς απόκρυψη. Ανάμεσα στο προσωπικό, με το μουστάκι είναι μάλλον ο, φοιτητής τότε, μετέπειτα ακαδημαϊκός Σπύρος Ιακωβίδης | Φωτογραφικό Αρχείο Εθνικού Αρχαιολογικού Μουσείου

Подготовка к вскрытию амфоры 750г. до н.э. Среди сотрудников Музея сидя слева тогдашний студент, будущий академик Спирос Иаковидис. Из фотоархива Национального Археологического Музея Афин.

Ценные мелкие артефакты.

Но шестимесячная спасательная операция - это не только тяжелые скульптуры. Ценные мелкие предметы были собраны в ящики, драгоценности отправлены в казну Банка Греции, составлены протоколы приема-передачи, и спасательными группами проводилась систематическая работа по учету. 35 ящиков были закопаны в пещере *Эннеакруну* и 22 нашли убежище в тюрьме *Сократа.* Многие мелкие глиняные предметы, фигурки и вазы разных размеров были упакованы в коробки, засыпаны песком на 5-6 метров и закопаны в подвалах улицы *Тосица*.

Πολύτιμα μικροαντικείμενα.

Όμως η 6μηνη επιχείρηση διάσωσης δεν αφορούσε μόνο τα βαρύτιμα γλυπτά. Τα πολύτιμα μικροαντικείμενα μαζεύτηκαν σε κιβώτια, τα κοσμήματα πήγαν στο θησαυροφυλάκιο της Τραπέζης της Ελλάδος, συντάχθηκαν πρωτόκολλα παράδοσης-παραλαβής και έγινε συστηματική εργασία καταγραφής από τα σωστικά συνεργεία.35 κιβώτια ετάφησαν στο σπήλαιο Εννεάκρουνου και 22 βρήκαν καταφύγιο στη φυλακή του Σωκράτη. Πολλά πήλινα μικροαντικείμενα, ειδώλια και αγγεία διαφόρων διαστάσεων εγκιβωτίστηκαν και καλύφθηκαν με άμμο 5-6 μέτρων και ετάφησαν στα υπόγεια της οδού Τοσίτσα.

Скрытие мраморных скульптур в яме в зале музея. | Фото: Национальный археологический музей. / Απόκρυψη μαρμάρινων γλυπτών σε λάκκο σε αίθουσα του Μουσείου. | Φώτο: Εθνικό Αρχαιολογικό Μουσείο

ГРЕЧЕСКИЙ КУЛЬТУРНЫЙ ЦЕНТР
Москва, Алтуфьевское шоссе, 44
офис № 9, 2 этаж
Тел.: 7084809 – Тел./Факс: 7084810

ΚΕΝΤΡΟ ΕΛΛΗΝΙΚΟΥ ΠΟΛΙΤΙΣΜΟΥ
Altufyevskoe shosse, 44, office No 9, 2nd floor
127566 Moscow, Russia
Tel.: +7 495 7084809; Tel./Fax: +7 495 7084810

e-mail: hcc@mail.ru info@hecucenter.ru
www.hecucenter.ru
skype: hellenic.cultural.center
facebook: https://www.facebook.com/Hecucenter/
vkontakte: http://vk.com/hecucenter
Instagram: @hecucenter

Древние музейные реликвии Археологического Музея, такие как золотые предметы, более мелкие артефакты и сокровища из Микен, также были похоронены во дворах и подвалах других музеев и общественных зданий. В это время как чиновники, работавшие днем и ночью, позаботились о хранении инвентарных каталогов крупнейшего музея страны.

При нацистском вторжении в Афины 27 апреля 1941 года офицеры оккупационных войск, войдя в помещение Национального археологического музея, увидели совершенно пустое здание. В результате были спасены бесчисленные объекты исторической и культурной ценности, которые после окончания войны снова увидели солнечный свет невредимыми.

Αρχαία κειμήλια του Αρχαιολογικού Μουσείου, όπως αντικείμενα από χρυσό, μικρότερα τεχνουργήματα και θησαυροί από τις Μυκήνες, θάφτηκαν, επίσης, στις αυλές και στα υπόγεια άλλων μουσείων και δημόσιων κτιρίων. Ενώ οι αρμόδιοι, οι οποίοι εργάζονταν νυχθημερόν, προνόησαν ώστε να φυλάξουν σε ασφαλές μέρος τους καταλόγους απογραφής εκθεμάτων του μεγαλύτερου μουσείου της χώρας.

Με την εισβολή των ναζί στην Αθήνα, 27 Απριλίου 1941, οι αξιωματικοί των κατοχικών δυνάμεων, μπαίνοντας στους χώρους του Εθνικού Αρχαιολογικού Μουσείου, αντίκρισαν ένα εντελώς άδειο κτίριο. Ως συνέπεια, διασώθηκαν αναρίθμητα αντικείμενα ιστορικής και πολιτισμικής αξίας, τα οποία μετά το τέλος του πολέμου είδαν ξανά το φως του ήλιου αλώβητα.

Когда немецкие оккупанты посетили это место 28 апреля 1941 года, после вступления немцев в Афины, они увидели пустые комнаты Национального археологического музея. Витрины пусты, статуи исчезли. На настойчивые вопросы нацистов о местонахождении экспонатов они получали однообразный ответ археологов: «Древности **похоронены** в земле».

Όταν οι Γερμανοί κατακτητές επισκέφτηκαν τον χώρο στις 28 Απρίλη 1941 αντίκρισαν τις άδειες αίθουσες του Εθνικού Αρχαιολογικού Μουσείου. Οι προθήκες άδειες, τα αγάλματα άφαντα. Στις επίμονες ερωτήσεις των Ναζί για το

που βρίσκονται τα εκθέματα έπαιρναν την μονότονη απάντηση των αρχαιολόγων: «Τα αρχαία είναι **θαμμένα** στη γη».

На этом настаивали археологи. В конце концов, нужны были деньги, чтобы выкопать и вернуть предметы античности в музеи, а раздираемая войной Германия не могла себе этого позволить. Пришлось ждать окончания войны.

Οι Αρχαιολόγοι επέμεναν. Άλλωστε χρειάζονταν χρήματα για να επανέλθουν τα αρχαία στα Μουσεία και η εμπόλεμη Γερμανία δεν μπορούσε να διαθέσει. Έπρεπε να περιμένουν τη λήξη του πολέμου.

Από την έκθεση για την ξενάγηση: ο Δίας ή Ποσειδώνας του Αρτεμισίου τυλιγμένος με πισσόχαρτο για να ενταφιαστεί το 1940-41 | Φωτογραφικό Αρχείο Εθνικού Αρχαιολογικού Μουσείου

Бог Зевс или Посейдон из Артемисион, из уникальных бронзовых изделий классического периода, опираясь на спину, завернутый в тарную бумагу влажность

ГРЕЧЕСКИЙ КУЛЬТУРНЫЙ ЦЕНТР
Москва, Алтуфьевское шоссе, 44
офис № 9, 2 этаж
Тел.: 7084809 – Тел./Факс: 7084810

ΚΕΝΤΡΟ ΕΛΛΗΝΙΚΟΥ ΠΟΛΙΤΙΣΜΟΥ
Altufyevskoe shosse, 44, office No 9, 2nd floor
127566 Moscow, Russia
Tel.: +7 495 7084809; Tel./Fax: +7 495 7084810

e-mail: hcc@mail.ru info@hecucenter.ru
www.hecucenter.ru
skype: hellenic.cultural.center
facebook: https://www.facebook.com/Hecucenter/
vkontakte: http://vk.com/hecucenter
Instagram: @hecucenter

Курос Суниона с 600 г. до н. э. привязанный поперечными веревками к груди, висит на шкиве между деревянными опорами для операции спуска. / Η απόκρυψη του Κούρου του Σουνίου στο όρυγμα που είχε διανοιχθεί μπροστά από το βάθρο του. (Φωτογραφικό Αρχείο Εθνικού Αρχαιολογικού Μουσείου).

Курос Суниона с 600 г. до н. э. привязанный поперечными веревками к груди, висит на шкиве между деревянными опорами для операции спуска, символический бородатый бог Зевс или Посейдон Артемизио из уникальных бронзовых изделий классического периода, опираясь на спину, завернутый в тарную бумагу, чтобы защищаться от влажности. Из воспоминаний академика **Спироса Иаковидиса**, студента первого курса 1940 г., участвовавшего в кропотливой работе по укрывательству. «*Мы слышали, что под улицей Патисион протекает река Кикловорос – там зарыли большую яму со многими важными скульптурами внутри, статуи, которые стоят, и очевидно, что они больше не экспонаты, так неуклюже выстроились, ожидающие, прямо живые люди на демонстрации или в центрах содержания под стражей*».

Ο Κούρος του Σουνίου από το 600 π.Χ. δεμένος με σκοινιά χιαστί στο στήθος, να κρέμεται από την τροχαλία ανάμεσα στα ξύλινα στηρίγματα για την επιχείρηση κατάβασης, ο εμβληματικός γενειοφόρος θεός, Δίας ή Ποσειδώνας του

Αρτεμισίου, από τα μοναδικά χάλκινα της κλασικής περιόδου, ακουμπισμένος ανάσκελα, τυλιγμένος με πισσόχαρτα για προστασία από την υγρασία -*κάπου εδώ ακούσαμε ότι κάτω από την Πατησίων κυλά το ποτάμι Κυκλοβόρος-, ένας μεγάλος λάκκος με πολλά σημαντικά γλυπτά στο εσωτερικό του, αγάλματα που στέκονται και είναι φανερό ότι δεν αποτελούν πια εκθέματα, έτσι αμήχανα παρατεταγμένα όπως αποτυπώνονται στην ασπρόμαυρη φωτογραφία, σε αναμονή, σαν «άνθρωποι σε διαδήλωση ή στα κρατητήρια»,* σύμφωνα με τη μαρτυρία του ακαδημαϊκού **Σπύρου Ιακωβίδη**, πρωτοετούς φοιτητή το 1940, που συμμετείχε στις εργώδεις εργασίες απόκρυψης.

Из фотоархива Национального Археологического Музея Греции, г. Афины. / Φωτογραφικό αρχείο Εθνικού Αρχαιολογικού Μουσείου.

Коллективная работа и ответственность. Идеальное убежище.

Работа в разные смены не прекращалась ни на минуту. Помогало знание того, что под полом были вырыты насыпи, которые создавали идеальные убежища для сокровищ. Древнегреческие скульптуры, посвященные святилищам или воздвигнутые в могилах выдающихся граждан своего времени,

свидетельствующие о существовании цивилизации на протяжении тысячелетий в этом месте, таким образом, возвращаются в землю. «*Там, где они принадлежат*»: таков был ответ на немецкий вопрос «*где же древности*». Прошло всего два месяца с апреля 1941 года и оккупации столицы нацистскими войсками, когда в июне руководитель службы художественной консервации оккупационных войск **Ганс Ульрике фон Зоннеберг** посетил музей со списком из 103 скульптур, запрашивая их доставку.

Συλλογική δουλειά και ευθύνη. Το ιδανικό καταφύγιο.

Η δουλειά σε βάρδιες δεν σταμάτησε λεπτό. Αρωγός, η γνώση ότι κάτω από τα δάπεδα υπήρχαν επιχώσεις τις οποίες έσκαψαν δημιουργώντας ιδανικά καταφύγια για τους θησαυρούς. Τα αρχαία ελληνικά γλυπτά, αφιερωμένα σε ιερά ή ανεγερμένα σε τάφους επιφανών πολιτών της εποχής τους, πειστήρια για την ύπαρξη πολιτισμού για χιλιετίες σε τούτον τον τόπο, επέστρεψαν έτσι στο χώμα. «Εκεί όπου ανήκουν»: αυτή ήταν και η απάντηση στο ερώτημα των Γερμανών «πού βρίσκονται τα αρχαία». Είχαν περάσει μόλις δύο μήνες από τον Απρίλιο του ‘41 και την κατάληψη της πρωτεύουσας από τα ναζιστικά στρατεύματα, όταν, τον Ιούνιο, ο προϊστάμενος της υπηρεσίας προστασίας μνημείων τέχνης των στρατευμάτων κατοχής **Χανς Ούλρικε φον Σόνεμπεργκ** επισκέφτηκε το μουσείο, με μια λίστα 103 γλυπτών, ζητώντας την παράδοσή τους.

Он нашел его пустым. Или, скорее, не совсем пустым, потому что пол был покрыт, поскольку Музей изменил свое назначение; в нем размещались различные правительственные учреждения, которые переехали туда после захвата правительственных зданий немецкими оккупационными силами: так разместилось почтовое отделение, служба социальной защиты разместилась на первом этаже в зале древнегреческих сосудов, другая комната была отдана под государственный оркестр для своих репетиций; в другом зале нашел убежище Музей греческого народного искусства, некоторые помещения были переполнены произведениями Национальной галереи, а на первом этаже в течение некоторого времени действовала трапеза (организация бесплатного питания для малоимущих) Союза греческих писателей, с почерневшими от котлов потолками.

Το βρήκε άδειο. Ή μάλλον όχι και τελείως άδειο, γιατί το πάτωμα καλύφθηκε όπως όπως και το μουσείο άλλαξε χρήση, φιλοξενώντας διάφορες κρατικές

υπηρεσίες που μετακόμισαν εκεί μετά την επίταξη διαφόρων κτιρίων: έτσι στέγασε το ταχυδρομείο, την υπηρεσία πρόνοιας στην αίθουσα των αγγείων στον πρώτο όροφο, μία αίθουσα είχε δοθεί στην κρατική ορχήστρα για τις πρόβες της, σε άλλη βρήκε στέγη το Μουσείο Ελληνικής Λαϊκής Τέχνης, κάποιοι χώροι καλύφθηκαν από έργα της Εθνικής Πινακοθήκης, ενώ στο ισόγειο λειτούργησαν για κάποιο διάστημα τα συσσίτια της Ένωσης Ελλήνων Λογοτεχνών, με τα ταβάνια να είναι ακόμη μαυρισμένα από τα καζάνια.

Только в Музее района Керамикос, в котором размещались экспонаты из раскопок Немецкого археологического института, нацисты требовали и добились выкапывания предметов античности, старины, чтобы немецкие археологи могли продолжить работу. Как только они были обнаружены и повторно выставлены, 9 ноября 1941 года состоялась экскурсия немецких офицеров, где на глазах у немецкого археолога **Гетауэра / Getauer** один из немецких офицеров был в восторге от черно-фигурного глиняного сосуда «исключительного искусства предмета, с изображением мертвеца» и взял его с собой. Экспонат больше так и не был найден никогда.

Μόνο στο **Μουσείο του Κεραμικού**, το οποίο στέγαζε εκθέματα από τις ανασκαφές του Γερμανικού Αρχαιολογικού Ινστιτούτου και οι Ναζί απαίτησαν και πέτυχαν το ξεθάψιμο των αρχαίων, προκειμένου οι Γερμανοί αρχαιολόγοι να συνεχίσουν να δουλεύουν. Μόλις ξεθάφτηκαν και επανεκτέθηκαν έγινε ξενάγηση Γερμανών Αξιωματικών, στις 9 Νοέμβρη 1941, όπου μπροστά στα μάτια του Γερμανού αρχαιολόγου Getauer ένας από αυτούς ενθουσιάστηκε με έναν πήλινο μελανόμορφο πίνακα «εξαιρετικής τέχνης μετά παραστάσεως προθέσεως νεκρού» και τον πήρε. Το έκθεμα δεν βρέθηκε ποτέ.

Ведущий археолог того периода **Христос Карузос** в своем интервью в журнале археологического общества «MENTOR» (от 16 июня 1945), подписанный инициалами **M.A.V.** , рассказывает:

«Как только немцы вступили в Грецию, их археологи в первую очередь потребовали, чтобы мы сразу открыли музеи, ссылаясь на то, что война закончилась, на то, что памятники древности испортятся в земле и на то, что во время войны людям свойственно прибегать к искусству. Упорное сопротивление нашей Археологической Службы спасло наши самые важные музеи от разрушения и разграбления. Потому что там, где они нашли возможность, но, к счастью, не очень часто, они привели музеи к разрушению и разграблению. Им удалось открыть музей *Керамикос*. Через несколько дней **немецкие офицеры украли перед глазами немецкого археолога, который привел их, красивый глиняный архаичный сосуд, с изображением похоронного действия.** В различных других провинциальных музеях (Мегара, Фивы, Хероиа, Танагра, Алмиро, Лариса, Вериа, Термо, Коринф, Аргос, Делос, Сифнос, Кноссос, Хания, Самос), немцы и итальянцы, после того, как туда вступили и обосновались, **разбили витрины, склады, в других местах они сжигали древесину, а также забрали все, то, что могли в других местах они взяли все памятники древности, что смогли перенести**. Все наши охранники в своем большинстве стояли превосходно верными своему долгу, подвергая опасности не только свою жизнь, но и жизнь своих родных. Некоторые памятники сильно пострадали, подверглись неисправимому ущербу (царская гробница в Кносском дворце, Акрополь Асинис, жертвенник Тиринфского дворца, Храм Посейдона в Сунионе, взрыв Лабиринта в Гортинии, взрыв минойской царской гробницы в Исопата, взрыв Стены Кононос).

Наша **Археологическая Служба** не упустила никакой возможности не обратиться к военной «**Службе охраны искусства**» с осуждением преступлений захватчиков, применяя мощную аргументацию и приводя неоспоримую документацию.

Однако, археологические *крестоносцы*, служившие на этой Службе, были озабочены только тем, как избежать фронт. Их *отвага* выражалась

составлением документов неописуемой грубости и дерзости, в которых, как правило, они всегда винили греков и терроризировали наших археологических служащих, обвиняя их в дискредитации оккупационной армии. Несколько охранников были заключены в тюрьму и подверглись пыткам, потому что они осмелились публично заявить и осудить преступления захватчиков. Не говоря об их незаконных, скрытых или открытых раскопках.»

Ο **Χρήστος Καρούζος**, σε συνέντευξή του στο περιοδικό «ΜΕΝΤΩΡ» της Αρχαιολογικής Εταιρείας (16 Ιούνη 1945), υπογραμμένη με τα αρχικά **Μ.Α.Β.**, διηγείται:

«Μόλις μπήκαν οι Γερμανοί, οι αρχαιολόγοι τους απαιτήσανε πρώτα – πρώτα να ανοίξουμε αμέσως τα μουσεία, λέγοντας στην αρχή πως ο πόλεμος τελείωσε πια, ύστερα πως τα αρχαία θα πάθουν κρυμμένα, ύστερα πως στον πόλεμο οι άνθρωποι έχουν ανάγκη να καταφεύγουν στην τέχνη. Η επίμονη αντίσταση της Αρχαιολογικής Υπηρεσίας μας, γλύτωσε τα σπουδαιότερα μουσεία μας από την καταστροφή και τη λεηλασία. Γιατί όπου βρήκαν ευκαιρία, όχι πολύ συχνά ευτυχώς, τα έκαμαν και τα δύο. Πέτυχαν να ανοίξουν το Μουσείο του Κεραμικού, που το είχαν κάμει αυτοί: Σε λίγες μέρες **Γερμανοί αξιωματικοί έκλεψαν μπροστά στα μάτια του Γερμανού αρχαιολόγου, που τους οδηγούσε, έναν ωραίο πήλινο αρχαϊκό πίνακα, με παράσταση πρόθεσης του νεκρού.** Σε διάφορα άλλα επαρχιακά Μουσεία (Μέγαρα, Θήβα, Χαιρώνεια, Τανάγρα, Αλμυρό, Λάρισα, Βέροια, Θέρμο, Κόρινθο, Αργός, Δήλο, Σίφνο, Κνωσό, Χανιά, Σάμο), Γερμανοί και Ιταλοί, αφού μπήκαν ή εγκαταστάθηκαν στα μουσεία, αλλού **έσπασαν βιτρίνες και αποθήκες, αλλού έκαψαν την ξυλεία, αλλού πήραν ό,τι αρχαία μπόρεσαν**. Οι φύλακές μας στάθηκαν όλοι, σχεδόν, αξιοθαύμαστα πιστοί στο καθήκον τους, με κίνδυνο όχι μόνο της δικής τους ζωής, αλλά και όλου του σπιτιού τους. Μερικά έπαθαν ανεπανόρθωτες καταστροφές για να κάμουν αυτοί τα «απόρθητα» οχυρώματά τους (Βασιλικός τάφος Κνωσού, Ακρόπολη

Ασίνης, βωμός ανακτόρου Τίρυνθος, Ναός Ποσειδώνος – Σούνιο, ανατίναξη του Λαβυρίνθου της Γύρτυνος, του μινωικού βασιλικού τάφου των Ισοπάτων, τείχη του Κόνωνος). Η Αρχαιολογική μας Υπηρεσία δεν άφησε καμία ευκαιρία που να μην απευθυνθεί στη στρατιωτική τους «υπηρεσία προστασίας της τέχνης» και να τους καταγγείλει, με σπάνια παρρησία και με πολύ έντονα έγγραφα, τα εγκλήματα τους. Οι αρχαιολογικοί σταυρωτήδες, όμως, που υπηρετούσαν εκεί, μόνη έγνοια είχαν το πώς θα γλιτώσουν το μέτωπο. Η γενναιότητά τους ξεθύμαινε με έγγραφα απερίγραπτης τραχύτητας και θρασύτητας, με τα οποία κατά κανόνα έριχναν πάντα την ευθύνη στους Ελληνες και φοβέριζαν τους αρχαιολογικούς μας υπαλλήλους για τη δυσφήμιση του στρατού κατοχής. Αρκετοί φύλακες φυλακίσθηκαν και βασανίστηκαν, επειδή είχαν τολμήσει να κάμουν τέτοιες καταγγελίες. Ας αφήσουμε τις παράνομες λαθραίες ή τις φανερές ανασκαφές τους».

Пустой зал музея, понедельник 28 апреля 1949 года. Фотоархив Национального Археологического Музея. /Η άδεια αίθουσα του Μουσείου την Δευτέρα 28 Απρίλη 1949. Φωτογραφικό Αρχείο Εθνικού Αρχαιολογικού Μουσείου

ГРЕЧЕСКИЙ КУЛЬТУРНЫЙ ЦЕНТР
Москва, Алтуфьевское шоссе, 44
офис № 9, 2 этаж
Тел.: 7084809 – Тел./Факс: 7084810

ΚΕΝΤΡΟ ΕΛΛΗΝΙΚΟΥ ΠΟΛΙΤΙΣΜΟΥ
Altufyevskoe shosse, 44, office No 9, 2nd floor
127566 Moscow, Russia
Tel.: +7 495 7084809; Tel./Fax: +7 495 7084810

e-mail: hcc@mail.ru info@hecucenter.ru
www.hecucenter.ru
skype: hellenic.cultural.center
facebook: https://www.facebook.com/Hecucenter/
vkontakte: http://vk.com/hecucenter
Instagram: @hecucenter

Во время оккупации **Христос Карузос** берет на себя управление Национальным Археологическим Музеем (1942г.) и вместе с **Мариносом Каллигасом, Яннисом Милиадисом** и другими бойцами Отдела археологии организации сопротивления **ЭАМ**, наряду с ежедневной борьбой по предотвращению дальнейших разрушений и разграблений археологических ценностей, предпринимают в 1943 году первую попытку зафиксировать разграбление нашего культурного наследия.

Στη διάρκεια της κατοχής ο **Χρήστος Καρούζος** αναλαμβάνει τη διεύθυνση του Εθνικού Αρχαιολογικού Μουσείου (1942) και μαζί με τον **Μαρίνο Καλλιγά,** τον **Γιάννη Μηλιάδη** και άλλους αγωνιστές μέλη του **ΕΑΜ Αρχαιολόγων**, μαζί με τον καθημερινό αγώνα να εμποδίσουν τις καταστροφές και τις λεηλασίες των αρχαιολογικών θησαυρών, ξεκινούν το 1943, την πρώτη απόπειρα καταγραφής της λεηλασίας της πολιτιστικής μας κληρονομιάς.

Несмотря на гигантские усилия по спасению памятников древности, в рапорте археологов ЭАМ, опубликованном в 1946 году, говорится о краже древностей завоевателями в 37 городах, в основном на Крите и Фессалии. Немецкие археологи провели незаконные раскопки в 17 районах Греции, отправив находки в Германию. Во время ухода немцев из Афин был нанесен большой ущерб древностям. Они уничтожили статуи и керамику на Акрополе и на Керамикосе огнестрельным оружием и штыками .

Παρά την γιγάντια προσπάθεια της διάσωσης των αρχαίων, σε έκθεση του ΕΑΜ Αρχαιολόγων που εκδόθηκε το 1946, καταγράφονται κλοπές αρχαιοτήτων από τους κατακτητές σε 37 πόλεις, κύρια στην Κρήτη και τη Θεσσαλία. Οι Γερμανοί αρχαιολόγοι έκαναν παράνομες ανασκαφές σε 17 περιοχές της Ελλάδας, στέλνοντας τα ευρήματα στη Γερμανία. Κατά την αναχώρηση των Γερμανών από την Αθήνα προκλήθηκαν μεγάλες ζημιές σε αρχαιότητες. Με πυροβολισμούς και με ξιφολόγχες κατέστρεψαν αγάλματα και αγγεία στην Ακρόπολη και τον Κεραμεικό.

Согласно отчету, немцы совершили кражи и снятые древности большой научной и художественной ценности из следующих музеев и археологических местностей: Керамикос, Пирей, Скарамангас, Вула, Вари, Коропи, Кератеа, Сунион, Элевсин, Элевсин, Эгина, Мегара, Фиаы, Ливадиа, Эвпалио, Галаксиди, Танагра, Хероиа, Копаида, Дельфы, Халкида, Эретрия, Коринф, Аргос, Лакониа, Киферы, Василико в Мессинии, Петалиди в Мессинии, Термо, монастырь Велас, монастыри и храмы Нэа Агхиалос, Лариса, Каламбака, Хасион (Храм Вознесения), Гура, Салоники, Потидэа, Комотини, Митилини, Самос, Тигани, Милос, Кастели Киссаму, Кноссос, Агиа Триада, Гортина, Фест (Крит).

Σύμφωνα με την έκθεση, οι Γερμανοί διέπραξαν κλοπές και αφαίρεσαν αρχαιότητες μεγάλης επιστημονικής και καλλιτεχνικής αξίας από τα εξής μουσεία και αρχαιολογικούς χώρους: Κεραμεικού, Πειραιά, Σκαραμαγκά, Βούλας, Βάρης, Κορωπίου, Κερατέας, Σουνίου, Ελευσίνας, Αίγινας, Μεγάρων, Θήβας, Λιβαδειάς, Ευπαλίου, Γαλαξιδίου, Τανάγρας, Χαιρώνειας, Κωπαΐδας, Δελφών, Χαλκίδας, Ερέτριας, Κορίνθου, Αργους, Λακωνίας, Κυθήρων, Βασιλικού Μεσσηνίας, Πεταλιδίου Μεσσηνίας, Θερμού, Μονής Βελάς, Ν. Αγχιάλου, Λάρισας, Καλαμπάκας, Χασίων(Μονή Αναλήψεως), Μονής Γκούρας, Θεσσαλονίκης, Ποτιδαίας, Κομοτηνής, Μυτιλήνης, Σάμου, Τηγανίου, Μήλου, και Καστελίου Κισσάμου, Κνωσού, Αγίας Τριάδας, Γόρτυνας, Φαιστού (Κρήτη).

ГРЕЧЕСКИЙ КУЛЬТУРНЫЙ ЦЕНТР
Москва, Алтуфьевское шоссе, 44
офис № 9, 2 этаж
Тел.: 7084809 – Тел./Факс: 7084810

ΚΕΝΤΡΟ ΕΛΛΗΝΙΚΟΥ ΠΟΛΙΤΙΣΜΟΥ
Altufyevskoe shosse, 44, office No 9, 2nd floor
127566 Moscow, Russia
Tel.: +7 495 7084809; Tel./Fax: +7 495 7084810

e-mail: hcc@mail.ru info@hecucenter.ru
www.hecucenter.ru
skype: hellenic.cultural.center
facebook: https://www.facebook.com/Hecucenter/
vkontakte: http://vk.com/hecucenter
Instagram: @hecucenter

Христос Карузос – великий археолог – защитник культурного наследия Греции/ Χρήστος Καρούζος: Ένας σπουδαίος αρχαιολόγος – υπερασπιστής της πολιτιστικής κληρονομιάς μας

Среди варварских действий завоевателей, которые подробно описаны, привлечем чисто индикативно несколько характерных случаев:
Ανάμεσα στις αθλιότητες των κατακτητών που καταγράφονται με λεπτομέρεια, αναφέρονται ενδεικτικά και χαρακτηριστικά:

Элевсин : *«Образованные немецкие солдаты, после тщательного изучения Музея, решились и осуществили кражу, после того, как ранее соорудили соответствующий для кражи инструмент. Они выломали специально изготовленным инструментом окно Музейного склада и отняли сосуды и фигурки. Замеченные охраной службой Музея, они покинули его на*

мотоцикле. Оправдания, данные ими в рапорте от 27 февраля 1942 года, носят крайне хамский, непозволительный характер; в нем характерно написано: «Настоящий инцидент/случай не должен истолковываться в качестве кражи, от которой герои инцидента разбогатели бы. Это следует из того факта, что это образованные люди, интересующиеся греческой античностью, о чем свидетельствует их знание английского языка и тот факт, что они пользуются путеводителем на английском языке. Взявшие предметы, скорее всего намеревались, таким образом, получить памятный сувенир» !!!

Ελευσίνα: *«Μορφωμένοι Γερμανοί στρατιωτικοί κατόπιν επισταμένης μελέτης του Μουσείου απεφάσισαν και εξετέλεσαν κλοπήν , αφού προηγουμένως κατεσκεύασαν και το προς την κλοπήν κατάλληλον εργαλείον. Εθραυσαν δηλαδή δια καταλλήλως προητοιμασμένου κοντού το παράθυρον της παρά το Μουσείον αποθήκης και δια του κοντού αφήρεσαν αγγεία και ειδώλια εξ αυτής. Γενόμενοι δε αντιληπτοί έφυγον επί μοτοσικλέτας. Αναιδής και αχαρακτήριστος είναι επίσης η δικαιολογία, την οποίαν έδωσεν η γερμανική υπηρεσία προστασίας καλλιτεχνημάτων δια του από 27.2.42 εγγράφου της (Kraiker) όπερ έχει επί λέξει ως εξής: «Η προκειμένη περίπτωσις δέον να μη θεωρηθή ως κλοπή, δι ής θα επλούτιζον οι δράσται. Τούτο συνάγεται εκ του γεγονότος ότι πρόκειται περί μορφωμένων ανθρώπων οίτινες έχουν ενδιαφέρον διά την ελληνικήν αρχαιότητα, όπερ συνάγεται εκ του ότι εγνώριζον την Αγγλικήν και έκανον χρήσιν του αγγλιστί γεγραμμένου οδηγού. Οι αποκομίσαντες θα είχον προφανώς την πρόθεσιν ν' αποκτήσουν ενδεχομένως διά του τρόπου τούτου έν ενθύμιον»»!!!*

Афины: в августе 1941 года на два месяца немецкие военные фаланги обосновались в районе храма Олимпийского Зевса в Афинах, ища защиты на месте археологических раскопок. Зимой 1941-42 годов немецкая артиллерия стояла на Древней Агоре (рыночная площадь) напротив библиотеки Адриана.

Αθήνα: Τον Αύγουστο του 1941 εγκαταστάθηκαν στο χώρο του Ολυμπίου των Αθηνών, για δυο μήνες, γερμανικές στρατιωτικές φάλαγγες, αναζητούσες προστασία στον αρχαιολογικό χώρο. Τον χειμώνα του 1941 – 42 γερμανική πυροβολαρχία εστάθμευε στην πλατεία της Παλαιάς Αγοράς απέναντι από την βιβλιοθήκη Αδριανού.

Олимпия: В период с 19 июня 1943 года по 8 сентября 1943 года в святилище Древней Олимпии среди руин, немецкие моторизованные фаланги, танки и бронемашины превратили местность в автостоянку ...
Сам **Акрополь** много раз превращался в публичный дом, даже в общественный писсуар: *«Для солдат оккупации все памятники Акрополя были писсуарами, чаще всего основной храм, Парфенон. В ночь с 27 на 28 ноября 1942 г. солдат оккупационных войск глумился над Парфеноном, оставляя свой кал внутри святилища».* На соответствующие протесты греческих археологов, немецкий наместник *Крайкер* с наглостью апеллировал на отсутствие знаков туалета, характерно изъявив, что ***«нет довольно явных знаков, указывающих на наличие туалетных комнат-WC» !!!***

Ολυμπία: Από την 19.6.43 μέχρι την 8.9.43 μέσα στο ιερό της Αρχαίας Ολυμπίας ανάμεσα στα ερείπια γερμανικές μηχανοκίνητες φάλαγγες, άρματα μάχης και τεθωρακισμένα αυτοκίνητα μετέτρεψαν τον χώρο σε σταθμό αυτοκινήτων…
Η ίδια η **Ακρόπολη** μετατράπηκε πολλές φορές σε πορνείο, ακόμα και σε δημόσιο ουρητήριο: *«Δια τους στρατιωτικούς της κατοχής όλα τα μνημεία της Ακροπόλεως ήσαν ουρητήρια, κατά προτίμησιν δε ο Παρθενών. Την νύκτα της 27-28 Νοεμβρίου 1942 στρατιωτικός των στρατών κατοχής εκόπρισεν εις το εσωτερικόν του Παρθενώνος».* Στις σχετικές διαμαρτυρίες των Ελλήνων Αρχαιολόγων ο Kraiker με θράσος απαντά ότι ***«δεν υπάρχουν αρκετά ευκρινώς τοποθετημέναι πινακίδες, αίτινες να υποδεικνύουν που υπάρχουν WC»!!!***

ГРЕЧЕСКИЙ КУЛЬТУРНЫЙ ЦЕНТР
Москва, Алтуфьевское шоссе, 44
офис № 9, 2 этаж
Тел.: 7084809 – Тел./Факс: 7084810

ΚΕΝΤΡΟ ΕΛΛΗΝΙΚΟΥ ΠΟΛΙΤΙΣΜΟΥ
Altufyevskoe shosse, 44, office No 9, 2nd floor
127566 Moscow, Russia
Tel.: +7 495 7084809; Tel./Fax: +7 495 7084810

e-mail: hcc@mail.ru info@hecucenter.ru
www.hecucenter.ru
skype: hellenic.cultural.center
facebook: https://www.facebook.com/Hecucenter/
vkontakte: http://vk.com/hecucenter
Instagram: @hecucenter

После освобождения наступили декабрьские события (декабрь 1944, начало конфронтации, переросшей в гражданскую войну 1946-1949гг.). То, что опасались археологи во время войны, произошло в декабре 1944 года, когда британцы бомбили здание Музея, среди прочих целей, преследуя *вражеский народ* Афин.

Μετά την απελευθέρωση ήρθαν τα Δεκεμβριανά. Αυτό που φοβόντουσαν οι Αρχαιολόγοι να συμβεί στη διάρκεια του Πολέμου, συνέβη τον Δεκέμβρη του 1944, όταν οι Αγγλοι βομβάρδισαν με αεροπορικές επιδρομές, ανάμεσα σε άλλους στόχους και το κτίριο του Μουσείου, κυνηγώντας τον εχθρό λαό της Αθήνας.

Меры предосторожности в отношении бомбардировок, возможно, послужили сдерживающим фактором для разграбления музея, но именно после Освобождения, Музей оказался в серьезной опасности. Поскольку во время гражданской войны он был преобразован в штаб партизан, он получал «союзнические» снаряды от британских войск, которые вместе с вооруженными силами тогдашнего правительства, установили на ближайшей горе Ликавитос пулемет и били по стенам Национального Археологического Музея.

Снаряды и их фрагменты были обнаружены во внутренних двориках музея; остались их следы на стенах, а также снаряд сбил его крышу.

Μπορεί οι προφυλάξεις για τους βομβαρδισμούς να λειτούργησαν αποτρεπτικά και για τη σύληση του μουσείου, ωστόσο ήταν μετά την Απελευθέρωση που κινδύνεψε σοβαρά. Καθώς στον Εμφύλιο είχε μετατραπεί σε αρχηγείο των ανταρτών, δέχτηκε «συμμαχικές» οβίδες από τις βρετανικές δυνάμεις που μαζί με τις στρατιωτικές δυνάμεις τής τότε κυβέρνησης είχαν πολυβολείο στον Λυκαβηττό.

Οβίδες και θραύσματά τους βρέθηκαν στις εσωτερικές αυλές του μουσείου, ίχνη τους στους τοίχους, ενώ μια οβίδα γκρέμισε και την οροφή του.

После освобождения…Декабрь 1944 г. Часть стены в атриуме Археологического Музея, испещренная следами осколков минометных снарядов, сохранившаяся до наших дней.

Μετά την απελευθέρωση…Δεκέμβρης 1944. Μέρος του τοίχου στο αίθριο του Μουσείου, γεμάτος σημάδια από θραύσματα οβίδων όλμων, όπως διατηρείται μέχρι σήμερα.

Директор Национального археологического музея **Христос Карузос** в 1945 году в журнале «Elefthera Grammata – Свободная словесность» характерно заявил: **«Мы справились и спасли наш Музей от немцев и итальянцев, которые много раз просили его обработать, но не удалось спасти его от греческих *гуманистов.* Они превратили его в тюрьму и в клинику для публичных женщин».**

ГРЕЧЕСКИЙ КУЛЬТУРНЫЙ ЦЕНТР
Москва, Алтуфьевское шоссе, 44
офис № 9, 2 этаж
Тел.: 7084809 – Тел./Факс: 7084810

ΚΕΝΤΡΟ ΕΛΛΗΝΙΚΟΥ ΠΟΛΙΤΙΣΜΟΥ
Altufyevskoe shosse, 44, office No 9, 2nd floor
127566 Moscow, Russia
Tel.: +7 495 7084809; Tel./Fax: +7 495 7084810

e-mail: hcc@mail.ru info@hecucenter.ru
www.hecucenter.ru
skype: hellenic.cultural.center
facebook: https://www.facebook.com/Hecucenter/
vkontakte: http://vk.com/hecucenter
Instagram: @hecucenter

В 1945 году началась работа по повторной экспозиции коллекций Национального археологического музея, которая была окончательно завершена в 1964 году.

Это было не в первый раз

Ο Διευθυντής του Εθνικού Αρχαιολογικού Μουσείου, Χρήστος Καρούζος ανέφερε χαρακτηριστικά το 1945 στα «Ελεύθερα Γράμματα»: **«Το Μουσείο μας κατορθώσαμε και το γλυτώσαμε από τους Γερμανούς και τους Ιταλούς, που ζήτησαν πολλές φορές να το μεταχειριστούν, όχι όμως και από τους Ελληνες ανθρωπιστές. Αυτοί το έκαμαν φυλακή και ιατρεία για δημόσιες γυναίκες».**

Το 1945 ξεκίνησε το έργο της επανέκθεσης των συλλογών του Εθνικού Αρχαιολογικού Μουσείου, κάτι που τελικά ολοκληρώθηκε το 1964.

Δεν ήταν η πρώτη φορά.

В нашей истории есть прецедент спасения таких статуй. Это было в 86-85 гг. до н.э., когда римский полководец **Лефкиос Корнелиус Сулла** напал на Афины и Пирей, разрушая и грабя все то, что ему попадалось на своем пути.

Тогда жители Пирея, чтобы спасти бронзовые статуи, похоронили их и они оставались похороненными в земле до лета 1959 года, когда они были найдены вместе с тремя другими мраморными статуями недалеко от порта Пирей в канализационных сооружениях на углу улиц *Вассилеос Георгиу* и *Филонос*.

Υπάρχει προηγούμενο διάσωσης με τέτοιο τρόπο, αγαλμάτων, στην ιστορία μας. Ηταν το 86 – 85 π.Χ. όταν ο Ρωμαίος στρατηγός **Λεύκιος Κορνήλιος Σύλλας** επιτέθηκε στην Αθήνα και τον Πειραιά καταστρέφοντας και λεηλατώντας ό,τι βρήκε στο δρόμο του.

Τότε οι Πειραιώτες, για να γλυτώσουν τα χάλκινα αγάλματα, τα έθαψαν και παρέμειναν θαμμένα μέχρι το καλοκαίρι του 1959 που βρέθηκαν, μαζί με άλλα

τρία μαρμάρινα αγάλματα, κοντά στο λιμάνι του Πειραιά, σε έργα αποχέτευσης στη γωνία των οδών *Βασιλέως Γεωργίου* και *Φίλωνος*.

Сегодня в залах Археологического Музея № 3 и 4 представлены четыре уникальные и впечатляющие бронзовые статуи: Аполлона, Афины и две Артемиды, вместе с трагической маской, которую держали вместе, чтобы избежать кощунственной ярости Силлы .

Σήμερα στις αίθουσες 3 – 4 του Μουσείου παρουσιάζονται τέσσερα μοναδικά και εντυπωσιακά χάλκινα αγάλματα. Ένα του Απόλλωνα, ένα της Αθηνάς και δυο της Αρτέμιδας, μαζί με ένα τραγικό προσωπείο που είχαν φυλαχτεί όλα μαζί για να γλυτώσουν από την ιερόσυλη μανία του Σύλλα.

Бронзовые статуи Археологического музея в Пирее. Слева Курос Аполлона, богиня Афина и рядом две статуи богине Артемиде. / Τα χάλκινα αγάλματα του Αρχαιολογικού Μουσείου Πειραιά. Από αριστερά ο Κούρος του Απόλλωνα, η Αθηνά, και δίπλα τους τα δυο αγάλματα της Αρτέμιδας.

ГРЕЧЕСКИЙ КУЛЬТУРНЫЙ ЦЕНТР
Москва, Алтуфьевское шоссе, 44
офис № 9, 2 этаж
Тел.: 7084809 – Тел./Факс: 7084810

ΚΕΝΤΡΟ ΕΛΛΗΝΙΚΟΥ ΠΟΛΙΤΙΣΜΟΥ
Altufyevskoe shosse, 44, office No 9, 2nd floor
127566 Moscow, Russia
Tel.: +7 495 7084809; Tel./Fax: +7 495 7084810

e-mail: hcc@mail.ru info@hecucenter.ru
www.hecucenter.ru
skype: hellenic.cultural.center
facebook: https://www.facebook.com/Hecucenter/
vkontakte: http://vk.com/hecucenter
Instagram: @hecucenter

Приключения не закончились даже после его поспешного открытия в 1947 году, поскольку он тогда предназначался для ... здания суда, чего удалось избежать после долгой борьбы.

Реставрация экспонатов началась в разгар гражданской войны 1946 года: снова начались лихорадочные работы по выкапыванию ям, в которых они хранились, по удалению их земляных панцирей и подготовке к экспонированию. Процесс восстановления экспозиций оказался таким же трудным, поскольку на многих карточках стерлись чернильные записи, медные экспонаты подверглись активному окислению, номера были потеряны, и было нелегко идентифицировать предметы.

Οι περιπέτειες δεν τελείωσαν ούτε με την εσπευσμένη επαναλειτουργία του το 1947, καθώς στη συνέχεια προοριζόταν για... δικαστικό μέγαρο, κάτι που απεφεύχθη ύστερα από μεγάλο αγώνα.

Η αποκατάσταση των εκθεμάτων αρχίζει μεσούντος του Εμφυλίου το 1946: οι εργασίες ήταν πάλι πυρετώδεις για να ξεθαφτούν από τους λάκκους όπου ήταν φυλαγμένα, να απομακρυνθεί το χωμάτινο κέλυφός τους και να είναι έτοιμα να εκτεθούν. Τακτοποίηση που αποδείχτηκε εξίσου δύσκολη, αφού πολλές καρτέλες είχαν χάσει το μελάνι τους, τα χαλκά είχαν ενεργή οξείδωση, είχαν χαθεί αριθμοί και δεν ήταν εύκολη η ταυτοποίησή τους.

Нобелевский лауреат, греческий поэт, дипломат Йоргос Сеферис пишет в своем дневнике.

В своем дневнике за 1946 год нобелевский лауреат, греческий поэт, литератор и дипломат ***Йоргос Сеферис*** *описывает свое посещение Археологического музея в полдень 4 июня 1946 года, в самом разгаре восстановительных работ.*
Как археологи выкапывают статуи, одни в рамах, другие совершенно голые, как «в одном из старых больших цехов рабочие работают лопатками и кирками по полу. Это могло бы быть любое археологическое место в процессе раскопок. Статуи, все еще погруженные в землю, видны посередине и сверху, едва посаженные случайно. Рука сверхъестественного бога, обнаженная женщина, повернувшаяся ко мне спиной, покрыта серой рабочей корзиной, из которой были видны только ее улыбающиеся ягодицы. Это был танец воскрешения. Второе присутствие тел, доставившее Вам

много радости. В других местах лежат статуи, чеканные вверх ногами (...) бронзовый Зевс, лежащий на сундуке, как обыкновенный усталый рабочий ... ».

Η περιγραφή του Γ. Σεφέρη

Στο ημερολόγιό του, στις μέρες για το 1946, ο Γιώργος Σεφέρης περιγράφει την επίσκεψή του το μεσημέρι στο Αρχαιολογικό Μουσείο, στις 4 Ιουνίου, κατά τη διάρκεια των εργασιών.

Το πώς τα ξεθάβουν, άλλα σε κάσες και άλλα γυμνά, το πώς *«σε μια από τις παλιές μεγάλες αίθουσες οι εργάτες δουλεύουν με φτυάρια και με αξίνες το δάπεδο. Θα μπορούσε να είναι ένας όποιος τόπος ανασκαφών. Τα αγάλματα βυθισμένα ακόμη στη γης φαίνονται από τη μέση και πάνω γυμνά φυτεμένα στην τύχη. Το μπράτσο κάποιου υπερφυσικού θεού, μια γυμνή γυναίκα που μου γυρίζει την πλάτη ήταν καπελωμένη με ένα γκρίζο καλάθι εργάτη που άφηνε να φαίνονται μόνο τα γελαστά της καπούλια. Ήταν ένας αναστάσιμος χορός αναδυομένων. Μια δευτέρα παρουσία σωμάτων που σου έδινε μια παλαβή χαρά. Αλλού αγάλματα ξαπλωμένα, ανάγλυφα στημένα ανάποδα (...) ο μπρούτζινος Δίας ξαπλωμένος πάνω σε μια κασέλα σαν ένας κοινός κουρασμένος εργάτης...».*

«За них мы боролись»

Современные археологи указывают на сложность всей задачи, так как любая вибрация могла открыть трещину, отслоить что-либо или нанести «телесные повреждения» в памятниках древности - и это было проблемой для специалистов. Они осознавали, что если будут торопиться или ошибиться, их действия имели бы последствия для самих экспонатов, на поверхности которых моментально видны любые повреждения; они настолько хрупки, что очень легко открываются в сварных швах. И это подвиг, что никаких повреждений с того периода не обнаружено.

«Για αυτά πολεμήσαμε»

Σύγχρονοι αρχαιολόγοι επισημαίνουν τη δυσκολία του όλου εγχειρήματος, καθώς οποιοσδήποτε κραδασμός μπορεί να ανοίξει ρωγμή, να αποκολλήσει κάτι ή να δημιουργήσει «σωματικές βλάβες» στις αρχαιότητες - και αυτό ήταν το μέλημα των ανθρώπων στην απόκρυψη, γιατί ήξεραν ότι αν βιαστούν ή αν κάνουν λάθος, οι πράξεις τους θα είχαν συνέπειες πάνω στα ίδια τα εκθέματα που «σωματοποιούν

τις βλάβες», είναι τόσο εύθραυστα και είναι πολύ εύκολο να ανοίξουν στις συγκολλήσεις. Και είναι άθλος ότι δεν έχουν διαπιστωθεί βλάβες από εκείνη την εποχή.

Эти статуи, поскольку на самом деле они создавались в качестве памятников на открытых пространствах, повидали многое. Во время войн и религиозных преследований, люди с древнейших времен, делали то же самое: они возвращали их в утробу, прятали в земле, а археологи упоминают ту нежность этого акта, т.е. способа захоронения, когда они просто наклоняли их и клали. лицом к лицу. «Они усыпили их и хоронили их, обнявшись», их хоронили таким образом, чтобы они смотрели друг на друга, чтобы сохранить их для следующих поколений, даже не зная, доживут ли они до того, чтобы выкопать их и увидеть снова.

Αυτά τα αγάλματα, καθώς μάλιστα ήταν καμωμένα για μνημεία σε υπαίθριους χώρους, έχουν δει πολλά. Στους πολέμους και τους θρησκευτικούς διωγμούς οι άνθρωποι από την αρχαιότητα έκαναν το ίδιο: τα επέστρεφαν στη μήτρα, τα έκρυβαν στη γη, και ο αρχαιολόγος κάνει μνεία στην τρυφερότητα ακόμη και αυτής της πράξης, στον τρόπο θαψίματος, όταν απλά τα πλάγιαζαν και τα έβαζαν αντικριστά, «τα βάζανε αγκαλιά να κοιμούνται», για να τα φυλάξουν για τις επόμενες γενιές, χωρίς ποτέ να γνωρίζουν αν θα ζήσουν οι ίδιοι για να τα ξεθάψουν και να τα ξαναδούν.

Национальный Археологический Музей Греции сегодня / Το Εθνικό Αρχαιολογικό Μουσείο σήμερα.

ГРЕЧЕСКИЙ КУЛЬТУРНЫЙ ЦЕНТР
Москва, Алтуфьевское шоссе, 44
офис № 9, 2 этаж
Тел.: 7084809 – Тел./Факс: 7084810

ΚΕΝΤΡΟ ΕΛΛΗΝΙΚΟΥ ΠΟΛΙΤΙΣΜΟΥ
Altufyevskoe shosse, 44, office No 9, 2nd floor
127566 Moscow, Russia
Tel.: +7 495 7084809; Tel./Fax: +7 495 7084810

e-mail: hcc@mail.ru info@hecucenter.ru
www.hecucenter.ru
skype: hellenic.cultural.center
facebook: https://www.facebook.com/Hecucenter/
vkontakte: http://vk.com/hecucenter
Instagram: @hecucenter

ГРЕЧЕСКИЙ КУЛЬТУРНЫЙ ЦЕНТР
Москва, Алтуфьевское шоссе, 44
офис № 9, 2 этаж
Тел.: 7084809 – Тел./Факс: 7084810

ΚΕΝΤΡΟ ΕΛΛΗΝΙΚΟΥ ΠΟΛΙΤΙΣΜΟΥ
Altufyevskoe shosse, 44, office No 9, 2nd floor
127566 Moscow, Russia
Tel.: +7 495 7084809; Tel./Fax: +7 495 7084810

e-mail: hcc@mail.ru info@hecucenter.ru
www.hecucenter.ru
skype: hellenic.cultural.center
facebook: https://www.facebook.com/Hecucenter/
vkontakte: http://vk.com/hecucenter
Instagram: @hecucenter

Источники:

- Карузу С., «Краткая история Национального музея», в Карузу С., Национальный археологический музей, Коллекция скульптур, Описательный каталог, Афины, 1967, ia'-k '.

- Пасхалидис К., «Основание, история и приключения Национального археологического музея, 130 лет работы в одной лекции».

- Петракос Б.Х., "Памятники древности Греции во время войны 1940-1944 гг."

- «Ущерб, нанесенный древностям войной и оккупационной армией», Афины, 1946 г.

https://www.imerodromos.gr/i-apokrypsi-kai-diasosi-ton-archaiotiton-sta-chronia-tis-katochis-1941-1944/

Πηγές:

— Καρούζου Σ., «Σύντομη Ιστορία του Εθνικού Μουσείου», στο Καρούζου Σ., Εθνικόν Αρχαιολογικόν Μουσείον, Συλλογή Γλυπτών, Περιγραφικός Κατάλογος, Αθήναι 1967, ια'-κ'.

— Πασχαλίδης Κ., «Η ίδρυση, η ιστορία και οι περιπέτειες του Εθνικού Αρχαιολογικού Μουσείου, 130 χρόνια λειτουργίας σε μία διάλεξη».

— Πετράκος Β.Χ., «Τα αρχαία της Ελλάδος κατά τον πόλεμο 1940-1944»

— «Ζημίαι των Αρχαιοτήτων εκ του Πολέμου και των Στρατών Κατοχής», Αθήναι 1946

https://www.imerodromos.gr/i-apokrypsi-kai-diasosi-ton-archaiotiton-sta-chronia-tis-katochis-1941-1944/

ГРЕЧЕСКИЙ КУЛЬТУРНЫЙ ЦЕНТР
Москва, Алтуфьевское шоссе, 44
офис № 9, 2 этаж
Тел.: 7084809 – Тел./Факс: 7084810

ΚΕΝΤΡΟ ΕΛΛΗΝΙΚΟΥ ΠΟΛΙΤΙΣΜΟΥ
Altufyevskoe shosse, 44, office No 9, 2nd floor
127566 Moscow, Russia
Tel.: +7 495 7084809; Tel./Fax: +7 495 7084810

e-mail: hcc@mail.ru info@hecucenter.ru
www.hecucenter.ru
skype: hellenic.cultural.center
facebook: https://www.facebook.com/Hecucenter/
vkontakte: http://vk.com/hecucenter
Instagram: @hecucenter

Автор текста, подбор материала: Теодора Янници, к.и.н.

Κείμενο, σύνταξη, επιμέλεια: Δώρα Γιαννίτση

ГРЕЧЕСКИЙ КУЛЬТУРНЫЙ ЦЕНТР
Москва, Алтуфьевское шоссе, 44
офис № 9, 2 этаж
Тел.: 7084809 – Тел./Факс: 7084810

ΚΕΝΤΡΟ ΕΛΛΗΝΙΚΟΥ ΠΟΛΙΤΙΣΜΟΥ
Altufyevskoe shosse, 44, office No 9, 2nd floor
127566 Moscow, Russia
Tel.: +7 495 7084809; Tel./Fax: +7 495 7084810

e-mail: hcc@mail.ru info@hecucenter.ru
www.hecucenter.ru
skype: hellenic.cultural.center
facebook: https://www.facebook.com/Hecucenter/
vkontakte: http://vk.com/hecucenter
Instagram: @hecucenter

ГРЕЧЕСКИЙ КУЛЬТУРНЫЙ ЦЕНТР
Москва, Алтуфьевское шоссе, 44
офис № 9, 2 этаж
Тел.: 7084809 – Тел./Факс: 7084810

ΚΕΝΤΡΟ ΕΛΛΗΝΙΚΟΥ ΠΟΛΙΤΙΣΜΟΥ
Altufyevskoe shosse, 44, office No 9, 2nd floor
127566 Moscow, Russia
Tel.: +7 495 7084809; Tel./Fax: +7 495 7084810

e-mail: hcc@mail.ru info@hecucenter.ru
www.hecucenter.ru
skype: hellenic.cultural.center
facebook: https://www.facebook.com/Hecucenter/
vkontakte: http://vk.com/hecucenter
Instagram: @hecucenter